चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

जुलाई-सितम्बर, 2024

A+ Grade NAEAB-ICAR Accredited

न्यूज़लेटर

हकृवि को पहली बार मिला सर्वश्रेष्ठ ए प्लस ग्रेड, मूल्यांकन के बाद नैब टीम ने घोषित किया परिणाम

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रत्यायन बोर्ड (नैब) की ओर से ए प्लस ग्रेड दिया गया है। इससे पूर्व विश्वविद्यालय लगातार 'ए' ग्रेड हासिल कर रहा था। अब विश्वविद्यालय का ओवरऑल ग्रेड ए प्लस हो गया है। ज्ञात रहे कि ए प्लस ही नैब की सर्वश्रेष्ठ ग्रेडिंग होती है। एचएयू के विभिन्न महाविद्यालयों एवं उनमें चल रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों को भी पांच साल की मान्यता प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त कृषि महाविद्यालय, बावल को भी पहली बार मान्यता प्रदान की गई है। विश्वविद्यालय ने ग्रेडिंग के 4.00 में से 3.52 अंक प्राप्त कर यह कामयाबी हासिल की है।

विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि देशभर में केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा वर्ष 2024 के लिए जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) में देश के कृषि विश्वविद्यालयों में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने तीसरा स्थान प्राप्त कर अपनी साख बढाई है इसी प्रकार कृषि शोध संस्थानों में विश्वविद्यालय 7वें स्थान पर रहा। साथ ही ओवरऑल कैटेगरी में देश के टॉप विश्वविद्यालयों में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रदेश का एकमात्र सरकारी विश्वविद्यालय रहा।

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी लगातार अपनी पहचान मजबूत कर रहा है। नैब की ओर से ए प्लस ग्रेड मिलना बेहद खुशी की बात है। विश्वविद्यालय का यह आंकलन गुणात्मक व मात्रात्मक मीट्रिक पर आधारित है। इस टीम में शामिल वरिष्ठ शिक्षाविदों ने शिक्षकों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों, अभिभावकों, पूर्व विद्यार्थियों, के साथ मुलाकात की और महाविद्यालयों, हॉस्टलों, खेल, स्वास्थ्य सहित विभिन्न आधारभूत सुविधाओं का निरीक्षण करने के उपरांत गुणात्मक घटकों का आकलन किया। विश्वविद्यालय को ए प्लस ग्रेड के साथ पांच वर्ष यानि 1 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2028 के लिए आईसीएआर ने मान्यता प्रदान की है। एचएयू के अंतर्गत आने वाले महाविद्यालयों में विभिन्न विषयों से संबंधित कोर्सेज कराए जाते हैं जिनमें यूजी के 7, पीजी के 47 व पीएचडी के 42 कोर्सेज शामिल हैं।

यहां उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय स्तर पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को कृषि उत्पादकता में वृद्धि तथा ग्रामीण समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान के लिए वर्ष 2019 में प्रतिष्ठित कृषि शिक्षा सम्मान अवार्ड प्रदान किया गया था। विश्वविद्यालय के एग्री बिजनेस इंक्युबेशन सेंटर (एबिक) को राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021 में बेस्ट इंक्युबेशन सेंटर का अवार्ड मिला। विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र, महेन्द्रगढ़ को वर्ष 2022 में राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ कृषि विज्ञान केन्द्र पुरस्कार से नवाजा गया है। वर्ष 2023 में विश्वविद्यालय को सरसों अनुसंधान एवं विकास कार्यों में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए सर्वश्रेष्ठ केन्द्र अवार्ड, हकृवि के चारा व बाजरा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड से नवाजा जा चुका है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए पदमश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है जोकि विश्वविद्यालय के लिए गर्व का विषय है। इसके अतिरिक्त भी इस विश्वविद्यालय ने अब तक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय

अंतर्वस्तु

हकृवि ने गन्ना की नई किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए शुगर मिल के साथ किया समझौता 2
दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि मंडल ने किया हकृवि का दौरा 3
निजी क्षेत्र को कृषि शोध में निगरानी के साथ बढ़ावा देना समय की मांग: भागीरथ चौधरी 4
हकृवि में राष्ट्रीय खेल दिवस पर 'फिट हिसार मैराथन' का आयोजन 4
एड्स नियंत्रण को लेकर राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित 5
विश्व उद्यमी दिवस पर गोष्ठी आयोजित 5
हकृवि में 'एडवांसिज इन एग्रोनॉमी: चौलंजिज बीयोंड ए+ ग्रेड' विषय पर ब्रेन स्टोरमिंग सत्र का आयोजन 6
पशुओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हरे चारे की उपलब्धता बहुत जरूरी: प्रो. बी.आर. काम्बोज 7
हकृवि व न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी मोरिंगा पर करेंगे शोध 7
हकृवि में 'फसल अवशेष प्रबंधन' पर दो दिवसीय कृषि मेला संपन्न 8
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में ओरिएंटेशन कार्यक्रम हुआ आयोजित 9
कृषि विज्ञान केन्द्रों की तीन दिवसीय वार्षिक समीक्षा कार्यशाला संपन्न 9
राष्ट्रीय सेवा योजना के स्थापना दिवस पर कार्यक्रम आयोजित 10
'कपास में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर कार्यशाला आयोजित 10
संक्षिप्त समाचार/संगोष्ठी/कार्यशाला/प्रशिक्षण में सहभागिता 11
हकृवि ने उच्च गुणवत्ता युक्त मक्का हाइब्रिड एच.क्यू.पी.एम 28 की विकसित 12

संरक्षक

प्रो. बी.आर. काम्बोज
कुलपति

संपादक

डॉ. संदीप आर्य
मीडिया सलाहकार

मुख्य संपादक

डॉ. राजबीर गर्ग
अनुसंधान निदेशक

University Publication No.
CCSHAU/PUB#18-0026-2024-14-3

ए+ प्लस ग्रेड सभी कर्मचारियों की मेहनत का परिणाम: कुलपति

कुलपति ने कहा कि यह ए प्लस ग्रेड हरियाणा राज्य तथा विश्वविद्यालय के शिक्षक, गैरशिक्षक कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों की प्रतिभा व किसानों की मेहनत का परिणाम है। यह सभी के लिए गर्व और हर्ष का विषय है। यह ए+ ग्रेड विश्वविद्यालय को कठोर मूल्यांकन का पालन करके पाठ्यक्रम, अनुसंधान, बुनियादी ढांचे, सीखने के संसाधनों, मूल्यांकन, नवाचार जैसे विभिन्न मापदंडों के आधार पर प्रदान किया गया है। उन्होंने कहा यह विश्वविद्यालय किसानों को समर्पित है इसलिए भविष्य में भी यह नवीन कृषि प्रौद्योगिकी विकास के द्वारा किसानों के कल्याण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहेगा।

स्तर पर कई अन्य पुरस्कार प्राप्त किए हैं। विश्वविद्यालय द्वारा एक ई-ट्रैक्टर बनाया गया है जो परिचालन लागत को कम करने के लिए और हरित ऊर्जा उपयोग की दिशा में उठाएं गए कदम को दर्शाता है। गोकलपुरा गांव में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा 63 एकड़ भूमि पर पोषक अनाज अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया गया। यह केन्द्र बरानी क्षेत्रों के किसानों के लिए मोटे अनाज की फसलों की उन्नत प्रौद्योगिकी विकसित करके वरदान साबित हो रहा है।

अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ कृषि, उद्योग और पर्यावरण में जैव प्रौद्योगिकी की क्षमता को महसूस करना जिसमें मार्कर सहायता प्राप्त चयन, जलवायु लचीलापन, आणविक प्रजनन, पौधों में लिंग पहचान, कृषि संबंधी महत्वपूर्ण लक्षणों का लक्षण वर्णन, बाजार-संचालित उत्पाद आदि के शोध कार्यो को ध्यान में रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने जैव प्रौद्योगिकी कॉलेज (कॉलेज ऑफ बायोटेक्नोलोजी) की स्थापना की। मत्स्य पालन भी संतुलित कृषि प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विश्वविद्यालय ने इस क्षेत्र में भी अग्रणी भूमिका निभाते हुए मत्स्य पालन में आधुनिक तकनीकों और प्रबंधन प्रथाओं से लैस प्रशिक्षित स्नातक तैयार करने के लिए मत्स्य विज्ञान कॉलेज की स्थापना की है।

विश्वविद्यालय में कृषि विज्ञान एवं हरियाणवी संस्कृति को संजोए हुए डॉ. मंगलसेन कृषि संग्रहालय स्थापित किया है। जिसमें हरियाणवी संस्कृति से जुड़ी दुर्लभ एवं प्राचीन कलाकृतियां एवं कृषि क्षेत्र से संबंधित उपकरण शामिल हैं। खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने तथा खिलाडियों को एक ही छत के नीचे सभी प्रकार की मूलभूत सुविधाएं मुहैया करवाने के लिए मल्टीपर्पज हॉल व कॉम्बैट हॉल बनाया गया है। इसके अलावा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएँ उपलब्ध करवा रहा है जैसे की सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक, लॉन टेनिस सिंथेटिक ट्रैक, इत्यादि जिसके इस्तेमाल से हमारे खिलाड़ी देश-विदेश में अपना नाम कमा रहें है।

विश्वविद्यालय में स्पीड ब्रीडिंग और माइक्रोमेटेरोलॉजी लैब की स्थापना की गई है जिससे फसलों की नई किस्म को जारी करने के लिए 3 से 4 साल का समय लगेगा जोकि पहले 10 से 12 वर्ष लगता था। गौरतलब है कि विश्वविद्यालय ने गत वर्षो में विभिन्न फसलों की 44 किस्में विकसित की हैं एचएयू प्रदेश के 6 लाख किसानों से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है व उनको दैनिक आधार पर मौसम की स्टीक जानकारी उपलब्ध करवा रहा है। विश्वविद्यालय के 7 कृषि विज्ञान केंद्रों पर स्थित सामुदायिक रेडियो स्टेशन के माध्यम से किसानों तक खेतीबाड़ी की तकनीकी जानकारी पहुंचा रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के अनुसार एबिक सेंटर के माध्यम से युवा, किसान व उद्यमी मार्केटिंग, नेटवर्किंग, लाईसेंसिंग, ट्रैडमार्क व पेटेंट, तकनीकी व फंडिग से संबंधित प्रशिक्षण लेकर पिछले 5 सालों में 65 स्टार्टअप्स स्थापित हो चुके हैं जिनके लिए 7 करोड़ की राशि स्वीकृत की जा चुकी है। कुलपति ने बताया कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। यही वजह है कि न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विश्वविद्यालय अपनी पहचान बनाए हुए है। गत वर्षों में विश्वविद्यालय द्वारा 142 विद्यार्थी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेजे हैं। उन्होंने बताया कि न केवल यहां के विद्यार्थी विदेशों में पढ़ाई के लिए जाते हैं बल्कि विदेशी छात्र भी पढ़ाई के लिए यहां आते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि यह विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा की अपनी अनिवार्य गतिविधियों में उच्च मानकों को दिन-प्रतिदिन बढ़ा रहा है। हकृवि ने गत वर्षों में उल्लेखीय उपलब्धि प्राप्त करते हुए 6 पेटेंट, 11 कॉपीराइट व 11 डिजाइन सहित कुल 28 बौद्धिक संपदा अधिकार प्राप्त किए। प्रदेश में उन्नत बीज उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय लगातार विभिन्न फसलों का उन्नत बीज पैदा कर रहा है जोकि राज्य के विभिन्न निगमों व किसानों को वितरित किया जाता है। शोध कार्यक्रमों को कृषि की बदलती परिस्थितियों के अनुसार बढ़ावा देने तथा कृषि की लाभकारी तकनीकों के व्यावसायीकरण के लिए राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुल 580 द्विपक्षीय समझौते किए गए हैं।

हकृवि ने गन्ना की नई किस्में किसानों तक पहुंचाने के लिए शुगर मिल के साथ किया समझौता

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नई किस्में सीओएच 188, सीओएच 176 और सीओएच 179 राज्य में भविष्य में गन्ने की खेती का नेतृत्व करेंगी। हकृवि की किस्में सीओएच 56 और सीओएच 119 अपने समय में बहुत लोकप्रिय रही हैं, जबकि सीओएच 160 हरियाणा ही नहीं बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी लोकप्रिय है। इन किस्मों ने गन्ने की खेती में क्रान्ति ला दी है। ये विचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मैसर्स सरस्वती शुगर मिल्स लिमिटेड, यमुनानगर के साथ एक समझौता ज्ञापन के दौरान व्यक्त किए। कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज व शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा की उपस्थिति में इस एमओयू पर हकृवि की ओर से मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा व उपरोक्त मिल्स की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष डीपी सिंह ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि गन्ना भारत और हरियाणा की एक बहुत ही महत्वपूर्ण नकदी फसल है। भारत में गन्ना 5.17 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में उगाया जाता है, जिसका उत्पादन 439.4 मिलियन टन और उत्पादकता 849

क्विंटल/हेक्टेयर है।

हरियाणा में यह फसल 1.07 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में उगाई जाती है, जिसका उत्पादन 88.82 लाख टन और उत्पादकता 819 क्विंटल/हेक्टेयर है। यह फसल किसानों की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और चीनी उद्योग को कच्चा माल उपलब्ध कराकर राष्ट्रीय और राज्य की अर्थव्यवस्था में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह फसल और चीनी उद्योग उभरते परिदृश्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि गन्ना पेट्रोल में मिश्रण के लिए इथेनॉल उत्पादन के लिए मुख्य फसल होगी।

शुगर मिल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एसके सचदेवा ने बताया कि गन्ने की खेती करने वाले किसान, इस फसल को संसाधित करने वाली चीनी मिलें और सरकार अनुकूल नीतिगत सहायता प्रदान करती है। हरियाणा राज्य में 14 चीनी मिलें हैं। चीनी मिलें चीनी, इथेनॉल और बिजली बनाने के लिए गन्ने को संसाधित करती हैं।

दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि मंडल ने किया हकृवि का दौरा

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं दक्षिण अफ्रीका की कवाजुलू यूनिवर्सिटी के प्रतिनिधि मंडल ने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की अध्यक्षता में विभिन्न महत्वाकांक्षी विषयों को लेकर एक बैठक आयोजित की। विश्वविद्यालय के दो दिवसीय दौरे पर आए दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि मंडल में विश्वविद्यालय के मानविकी महाविद्यालय में अनुसंधान अधिष्ठाता प्रो. विवीयन ओजोंग, निदेशक प्रो. हसन काया, विज्ञान विभाग की शोध प्रबंधक डॉ. मायाश्री चिनसामी, दक्षिण अफ्रीका के नेल्सन मंडेला विश्वविद्यालय से सांइस मिशन के पूर्व मुख्य निदेशक प्रो. योनाह स्लेटी, मीडिया प्रतिनिधि तेज मोथीबे शामिल रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि दोनों विश्वविद्यालय मोटे अनाज (मिलेटस) की खेती और प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि मक्का, गन्ना, आलू और बाजरा जैसी कई फसलें हैं जो भारत के साथ-साथ दक्षिण अफ्रीका में भी उगाई जाती हैं। इन फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए दोनों विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक आपसी तालमेल के साथ संयुक्त रूप से कार्य करेंगे।

दक्षिण अफ्रीका के कवाजुलू विश्वविद्यालय के मानविकी महाविद्यालय में अनुसंधान अधिष्ठाता प्रो. विवियन ओजोंग ने बताया कि जलवायु परिवर्तन, डिजिटाइजेशन, सामुदायिक विज्ञान, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियां और उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियों में एचएयू उच्च स्तरीय कार्य कर रहा है एवं इस आपसी सहयोग से दक्षिण अफ्रीका के लोगों को भी फायदा होगा। दक्षिण अफ्रीकी प्रतिनिधियों ने एचएयू के बाजरा उत्कृष्टता केंद्र और विश्वविद्यालय के 'अर्निंग व्हाइल लर्निंग' जैसे कार्यक्रमों की भी प्रशंसा की।

अनुसंधान निदेशक एवं नोडल अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा ने दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधि मंडल का हकृवि में पहुंचने पर स्वागत किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा, अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. राजेश गेरा, परियोजना डायरेक्टर डॉ. सुरेन्द्र धनखड़, दीन दयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्ठता केन्द्र के निदेशक डॉ. अनिल कुमार मौजूद रहे।

निजी क्षेत्र को कृषि शोध में निगरानी के साथ बढ़ावा देना समय की मांग: भागीरथ चौधरी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस बैठक में देश के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, वैज्ञानिकों निजी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों एवं प्रगतिशील किसानों सहित सभी हितधारकों ने भाग लिया।

फसल उत्पादन के साथ ही उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए समग्र सिफारिशे उपलब्ध करवाना कृषि विश्वविद्यालय की अह्म भूमिका है क्योंकि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता के आधार पर ही किसान अंतरराष्ट्रीय बाजार में इन्हे बेचकर अच्छी आमदनी हासिल कर सकते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कई क्षेत्रों में खेती में रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि रसायनों का प्रयोग सिफारिश से अधिक होने के कारण आज यह भूमि, जल व पर्यावरण में घुलने

के साथ खाद्य श्रृंखला (फूड चेन) में प्रवेश कर गए हैं जो मानव जाति में गंभीर बीमारियों का कारण बन रहे हैं। कृषि में प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध हो रहे दोहन पर चिंता जताई और किसानों को कृषि उत्पादन के साथ इनकी गुणवत्ता सुधारने पर ध्यान देने को कहा। साथ ही जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए ऐसी फसलों की उन्नत किस्में उगाने को बढ़ावा देना चाहिए जो कम पानी में अधिक पैदावार दे सकें।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि हितधारकों की इस बैठक में डीएएफडब्ल्यू के सचिव डॉ. देवेश चर्तुवेदी ने सभी का स्वागत किया। आईसीएआर के डीजी डॉ. हिमांशु पाठक ने उपरोक्त विषय के संदर्भ पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर आईसीएआर के पूर्व डीजी डॉ. एस अयपन्न व डॉ. त्रिलोचन महापात्रा एनआरएए के सीईओ डॉ. अशोक डलवानी, जेएनयू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. सुधीर के सोपोरी व डॉ. प्रवीण राव, डॉ. अरबिन्द कुमार पाधी, डॉ. राम कोनदनिया, प्रभाकर राव, कंवल सिंह चौहान, डॉ. एके सिंह, डॉ. केबी काथिरिया, डॉ. के केशावुलू , डॉ. सुरेन्द्र टिक्कु, डॉ. राजवीर सिंह राठी, मनोज भाई पुरूषोतम सोलंकी ने भी उपरोक्त विषय पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान प्रीतम सिंह, पलविंदर सिंह, सुभाष चंद, सुल्तान सिंह, सुरेन्द्र सिंह व सुरेन्द्र सिंह स्याड़वा भी उपस्थित रहे।

हकृवि में राष्ट्रीय खेल दिवस पर 'फिट हिसार मैराथन' का आयोजन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान के अंतिम वर्ष की छात्राओं ने राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर 'फिट हिसार मैराथन' का आयोजन किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय परिसर से बतौर मुख्य अतिथि हरी झंडी दिखाकर मैराथन का शुभारंभ किया।

कुलपति प्रो बी.आर. काम्बोज ने उपस्थित विद्यार्थियों, खिलाडियों व शिक्षाविदों को संबोधित करते हुए कहा कि हॉकी के महान जादूगर मेजर ध्यानचंद के जन्मदिवस को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि खिलाडियों को आगे बढने के लिए मेजर ध्यानचंद के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। इस महान खिलाड़ी ने देश को उस समय तीन बार ओलंपिक खेलों में गोल्ड मेडल दिलाए, जब हमारे पास हॉकी के न तो अच्छे ग्राउंड थे और न ही अच्छी सुविधाएं।

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव ने बताया कि 'फिट हिसार मैराथन' महाविद्यालय परिसर से आरंभ होकर हरसेक, ऑर्गेनिक फार्म, कृषि महाविद्यालय, फैकल्टी क्लब, विश्वविद्यालय गेट न. एक, ठंडी सडक, विश्वविद्यालय गेट न. चार से होकर उपरोक्त महाविद्यालय के प्रांगण में सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता में 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

एड्स नियंत्रण को लेकर राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में एचआईवी एड्स को लेकर एक दिवसीय राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम हरियाणा राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी, राष्ट्रीय सेवा योजना व हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा सयुक्त रूप से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों के एनएसएस प्रोग्राम कोर्डिनेटर एवं एनएसएस अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे जबकि राज्य एनएसएस अधिकारी डॉ. दिनेश कुमार विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद रहे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहा कि एड्स के प्रति स्वयं को जागरूक होने के साथ-साथ समाज के अन्य लोगों को भी जागरूक करने की जरूरत है। एड्स एक लाइलाज बीमारी है और जागरूकता ही इसका इलाज है। उन्होंने कहा कि देश को वर्ष 2030 तक एचआईवी एड्स से मुक्त करने के लिए एक अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत कार्यक्रम आयोजित करके लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि इस बीमारी की स्थिती कितनी भयावह है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि विश्व में लगभग चार करोड़ लोग एचआईवी से संक्रमित है। भारत में 25 लाख से अधिक लोग एचआईवी एड्स से संक्रमित है। हरियाणा में 56 हजार से अधिक लोग एचआईवी के साथ जी रहे हैं। राज्य एनएसएस अधिकारी डॉ. दिनेश कुमार ने कहा कि समाज एवं राष्ट्र के नवनिर्माण में एनएसएस का अह्म योगदान है। एनएसएस लोगों को एचआईवी एड्स के प्रति जागरूक करने के लिए विशेष भूमिका निभा रहा है। हरियाणा राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी की उप निदेशक डॉ. उजिता बाल्यान ने एचआईवी एड्स को लेकर लोगों को जागरूक करने के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदल लाल खीचड़ ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि एनएसएस द्वारा एचआईवी एड्स के नियंत्रण को लेकर विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे ताकि इस बीमारी पर काबू पाया जा सके। राष्ट्रीय सेवा योजना अवार्डी डॉ. भगत सिंह ने कार्यक्रम में आए हुए सभी जनों का धन्यवाद किया। मंच का संचालन डॉ. चन्द्रशेखर डागर ने किया।

विश्व उद्यमी दिवस पर गोष्ठी आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय स्थित कृषि महाविद्यालय के सभागार में विश्व उद्यमी दिवस के अवसर पर छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। 'भारत @-2047 समृद्ध एवं महान भारत' विषय पर आयोजित इस गोष्ठी में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि मुख्य वक्ता के तौर पर प्रसिद्ध आर्थिक विशेषज्ञ सतीश कुमार उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि उद्यमिता के माध्यम से हम देश को सशक्त व महान बना सकते हैं। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे राष्ट्र की प्रगति एवं समृद्धि के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य करें ताकि वर्ष 2047 तक भारतवर्ष को विकसित राष्ट्र बनाया जा सके।

विद्यार्थियों को उच्च आदर्शों एवं संस्कारों से परिपूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने के लिए देश में विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों कि कोई कमीं नहीं है। सभी व्यक्तियों को सरकारी सेवाएं उपलब्ध नहीं हो सकती हैं, इसलिए स्वावलंबी भारत अभियान के तहत युवाओं को स्वरोजगार से जोडने तथा समृद्ध एवं खुशहाल भारत के निमार्ण के लिए ग्रामीण स्तर पर लघु औद्योगिक इकाइयां स्थापित करनी होगी।

उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय निरंतर प्रयासरत है। इसके लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम और पाठ्यक्रम की शुरुआत की गई है। कार्यक्रम में कुलपति व मुख्य वक्ता ने एक पुस्तक का विमोचन किया तथा कृषि महाविद्यालय के परिसर में पौधारोपण भी किया।

भारत को महान बनाने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका: सतीश कुमार

मुख्य वक्ता सतीश कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि समृद्ध एवं महान भारत बनाने के लिए स्वावलंबी भारत अभियान योजनबद्ध ढंग से समुचे देश में चलाया जा रहा है।

युवा पीढ़ी को विकसित भारत बनाने के लिए कार्य करना होगा। इसके लिए उन्होंने आठ स्तंभ का भी उल्लेख किया जिनमें वाइब्रेंट डेमोक्रेसी, पूर्ण रोजगार युक्त भारत, वैश्विक सर्वोच्च अर्थव्यवस्था, अभेद सुरक्षा तंत्र वाला भारत, विज्ञान एवं तकनीकी में अग्रणी भारत, पर्यावरण हितैषी भारत, विश्व बंधुत्व वाला भारत व उच्च जीवन मूल्यों से युक्त भारत शामिल हैं। उन्होंने कहा कि कौशल विकास के माध्यम से युवाओं की रोजगार क्षमता को बढ़ाने के लिए पहली बार कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय का भी गठन किया गया है।

एचएयू कि सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि युवाओं को उद्यमी बनाने में लगातार प्रशिक्षण प्रदान करने का अग्रणी काम कर रहा है। हकृवि के रिटायर्ड प्रोफेसर डॉ. वीपी लोहाच ने बताया कि स्वावलंबी भारत अभियान के चार पिल्लर बताए जिनमें स्वदेशी, विकेंद्रीकरण, उद्यमिता और सहकारिता शामिल है। सामाजिक कार्यकर्ता कुलदीप पूनियां ने अपने संबोधन में कहा कि वे संकल्प लेकर जाए कि नौकरी लेने वाला नहीं-नौकरी देने वाला बनुंगा।

छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़ ने गोष्ठी में आए हुए सभी महानुभावों का स्वागत किया तथा कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने धन्यवाद किया।

हकृवि में 'एडवांसिज इन एग्रोनॉमी: चौलंजिज बीयोंड ए+ ग्रेड' विषय पर ब्रेन स्ट्रोरमिंग सत्र का आयोजन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय स्थित कृषि महाविद्यालय में एग्रोनॉमी विभाग द्वारा 'एडवांसिज इन एग्रोनॉमी: चौलंजिज बीयोंड ए+ ग्रेड' विषय पर ब्रेन स्ट्रोरमिंग सत्र का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि जबकि जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के पूर्व कुलपति डॉ. डीपी सिंह विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। गौरतलब है कि हाल ही में विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रत्यायन बोर्ड (नैब) की ओर से ए प्लस ग्रेड दिया गया है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि को भविष्य में और अधिक प्रभावी बनाने एवं प्रदेश के किसानों को बेहतर कृषि तकनीक उपलब्ध करवाने के बारे में मंथन किया गया।

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करके समग्र सिफारिशों को खेती में लागू करवाकर सस्य वैज्ञानिक अह्म भूमिका निभा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन, मृदा में बढ़ती लवणता व जलभराव की समस्या से निपटने के लिए नई-नई तकनीक विकसित करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए उन्होंने संरक्षित खेती, कम पानी में अधिक पैदावार देने वाली कृषि पद्धतियां विकसित करने के लिए वैज्ञानिकों को प्रेरित किया। कुलपति ने वैज्ञानिकों को किसानों की जरूरतों के हिसाब से शोध करने, शोधार्थियों का मार्गदर्शन करने व विकसित तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के लिए बधाई दी व भविष्य में और बेहतर ढंग से कार्य करने की सलाह भी दी।

डॉ. डीपी सिंह ने अपने संबोधन में हकृवि में किए गए अपने कार्यों एवं अनुभवों को सांझा करते हुए कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिकों को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय के कार्यों एवं उपलब्धियों के प्रचार एवं प्रसार के साथ-साथ विद्यार्थियों को अलग-अलग संस्थानों में भ्रमण के माध्यम से नई-नई तकनीक सीखाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रेरित किया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने उच्च संस्थानों में किए गए अपने भ्रमण संबंधी अनुभव सांझा किए। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कृषि क्षेत्र में जल संरक्षण पर अपने विचार रखे व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित कृषि तकनीकों को किसानों तक जल्दी से जल्दी पहुंचाने पर अपने विचार रखे। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके ठकराल ने कार्यक्रम में सभी वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों का स्वागत करते हुए विभाग की उपलब्धियों की जानकारी दी।

कार्यक्रम में डॉ. वीरेन्द्र हुड्डा ने विश्वविद्यालय द्वारा अर्जित की गई ए प्लस ग्रेड की उपलब्धि को कविता के माध्यम से सभी के सामने रखा। मंच का संचालन डॉ. प्रवीण कुमार ने किया व डॉ. एसके शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पशुओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हरे चारे की उपलब्धता बहुत जरूरीः प्रो. बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरिंग मंत्रालय भारत सरकार के दो अग्रणी संस्थानों सीईएएच, बैंगलुरू और रीजनल फोडर स्टेशन, हिसार द्वारा 'भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति' (एएफएमआई-2024) विषय पर पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के पशु चिकित्सकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त (राष्ट्रीय पशुधन मिशन) डॉ. एचआर खन्ना व संयुक्त आयुक्त और निदेशक (सीईएएच) डॉ महेश पीएस भी मौजूद रहे। प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है।

कुलपति ने कहा कि देश में इस समय 11.3 प्रतिशत हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी है। कृषि भूमि सीमित होने के कारण चारा फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाना कठिन है लेकिन हम चारा फसलों की उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध करवाकर, चारा उत्पादन की नई-नई तकनीक विकसित करके, विभिन्न क्षेत्रों के लिए चारा फसलों के उचित फसल चक्र विकसित करके, बहुवर्षीय चारा फसलों की खेती करके इसका बेहतर प्रबंधन कर सकते है जिससे न केवल हमारे पशुधन की उत्पादकता बढ़ेगी बल्कि किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। चारे की कमी के दिनों में साइलेज व हे बनाकर पशुओं को खिलाया जा सकता है।

डॉ. महेश ने कार्यशाला में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम की थीम और आवश्यकताओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। क्षेत्रीय चारा केन्द्र, हिसार के निदेशक डॉ. पी.पी. सिंह ने सभी का धन्यवाद किया।

हकृवि व न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी मोरिंगा पर करेंगे शोध

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड के शोधार्थी एवं शिक्षक मोरिंगा (ड्रमस्टिक) पर मौसम में हो रहे बदलाव की वजह से पड़ने वाले प्रभाव पर संयुक्त रूप से रिसर्च का कार्य करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रोजेक्ट के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम में हो रहे बदलाव के कारण मोरिंगा के बीज तथा पत्तियों में टैनिंन और एंटीओक्सीडेंट प्रोपर्टीज पर पडने वाले प्रभाव पर रिसर्च किया जाएगा। रिसर्च के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'स्पार्क' परियोजना को वित्तीय सहायता की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है।

उन्होंने बताया कि इसके लिए हिमालय रीजन, उतराखंड व दक्षिणी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से मोरिंगा के सैंपल लिए जाएंगे। शोध के लिए हकृवि द्वारा दो टीमों का गठन किया गया है। जिसमें विश्वविद्यालय की ओर से पीआई डॉ. जयंती टोकस व को-पीआई डॉ. अक्षय भूकर, न्यूजीलैंड विश्वविद्यालय की ओर से टीम में पीआई डॉ. क्रैग मैक गिल और को-पीआई डॉ. पैनी बैक को शामिल किया गया है।

डॉ. जयंती टोकस ने बताया कि मोरिंगा पर शोध के लिए विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के दो शोधार्थी मैसी यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंड का दौरा करेंगे।

हकृवि में 'फसल अवशेष प्रबंधन' पर दो दिवसीय कृषि मेला संपन्न

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) आयोजित किया गया। मेले में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि रहे। कृषि मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' रखा गया। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा नई तकनीकों की जानकारी देने के लिए 262 स्टालें लगाई गई। मेले में किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाने के लिए समुचित प्रबंध किए गए।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि हरियाणा के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था जो वर्ष 2021-22 में बढकर 230 लाख टन हो गया है। आज हरियाणा की गेहूं की औसत पैदावार 49.25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर एवं सरसों की औसत पैदावार 20.58 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। हरियाणा बासमती चावल के लिए भी विशेष रूप से विख्यात है तथा देश के 60 प्रतिशत से अधिक बासमती चावल का निर्यात केवल हरियाणा से ही होता है और देश के कुल खाद्यान्न में 17 प्रतिशत का योगदान कर रहा है।

फसल उत्पादन में इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ चुनौतियां भी साामने आई है जैसे मृदा की उर्वरा शक्ति का कम होना, फसल अवशेषों का सदुपयोग ना होना आदि। जमीन की उर्वरा शक्ति घटने के

साथ-साथ भूमि के लाभदायक जीवाणु भी अवशेषों को जलाने से नष्ट हो जाते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' इसीलिए रखा गया ताकि किसानों को इसके प्रति जागरूक किया जा सके। फसल अवशेष प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों से विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं।

'फसल अवशेष प्रबंधन'

विभिन्न फसलों की कटाई के बाद बचे हुए डंठल, बचे हुए पुआल, भूसा, तना तथा जमीन पर पड़ी हुई पत्तियों आदि को फसल अवशेष कहा जाता है। विगत एक दशक से खेती में मशीनों का प्रयोग बढ़ा है। साथ ही खेतीहर मजदूरों की कमी की वजह से भी यह स्थिति बन गई है। ऐसे में कटाई व गहाई के लिए कंबाईन हार्वेस्टर का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ा है, जिसकी वजह से भारी मात्रा में फसल अवशेष खेत में पड़ा रह जाता है। जिसका समुचित प्रबन्धन एक चुनौती है।

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने मेले में सभी का स्वागत करते हुए मेले में दी जाने वाली सुविधाएं जैसे मिट्टी पानी की जांच, बीज व पौध तथा कृषि साहित्य की उपलब्धता के साथ नई किस्मों के प्रदर्शन प्लाट के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

दोनों दिन 39 हजार 600 किसानों ने की शिरकत, 2 करोड़ 39 लाख के बिके बीज

उधर मेले में दोनो दिन 39 हजार 600 किसानों की उपस्थिति दर्ज की गई। उन्होंने नए उन्नत बीजों, कृषि विधियों, सिंचाई यंत्रों, कृषि मशीनरी आदि की जानकारी हासिल की। मेले में आगामी रबी फसलों के बीजों के लिए किसानों में भारी उत्साह देखा गया जहां किसानों ने गेहूं, जौ, सरसों, चना, मेथी, मसूर, बरसीम, जई, तथा मक्का की उन्नत किस्मों के लगभग 2 करोड़ 39 लाख रूपए के बीज खरीदे। मेले में 65 हजार रूपए के कृषि साहित्य की बिक्री हुई। सब्जी व बागवानी फसलों के बीजों की 1 लाख 97 हजार 900 रूपए की बिक्री हुई।

किसानों ने मेले में मिट्टी व पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए मिट्टी के 123 तथा पानी के 290 नमूनों की जांच करवाई। किसानों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म पर वैज्ञानिकों द्वारा उगाई गई फसलें भी देखीं तथा उनमें प्रयोग की गई प्रौद्योगिकी के साथ-साथ जैविक खेती बारे जानकारी हासिल की।

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में ओरिएंटेशन कार्यक्रम हुआ आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के इंदिरा चक्रवर्ती सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2024-25 में दाखिला पाने वाले नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि छात्राओं को शैक्षणिक सुविधाओं के साथ-साथ खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लेना चाहिए। छात्राओं को अपना लक्ष्य निर्धारित कर अनुशासन में रहकर कड़ी मेहनत करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि छात्राओं को अपने करियर के निर्माण के लिए ज्ञान के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास पर भी ध्यान देना चाहिए क्योंकि शिक्षा से ज्ञान का विकास होता है।

कुलपति ने नवागंतुक छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वह बहुत भाग्यशाली हैं कि उन्हें इस विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला है। यहां पर विश्व स्तरीय सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिनका लाभ उठाकर उन्हें अपना लक्ष्य हासिल करना चाहिए।

विश्वविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव ने कार्यक्रम में उपस्थित नवागंतुक विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों व विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध करवाई जा रही सुविधाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों से नैतिक मूल्यों के साथ-साथ अनुशासन का पालन करने का भी आह्वान किया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ. ज्योति सिहाग ने सभी का धन्यवाद किया। मंच का संचालन महक कौशिक व सिमरन ने किया। उपरोक्त महाविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ. किरण सिंह, डॉ. नीलम रोज व डॉ. बीनू सांगवान ने अपने-अपने विभाग के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की तीन दिवसीय वार्षिक समीक्षा कार्यशाला संपन्न

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में राजस्थान, हरियाणा एवं दिल्ली के कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक समीक्षा कार्यशाला संपन्न हुई। आईसीएआर के उप महानिदेशक (कृषि प्रसार) डॉ. यूएस गौतम कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने की।

डॉ. यूएस गौतम ने अपने संबोधन में कहा कि भारत वर्ष को विकसित राष्ट्र बनाने में कृषि क्षेत्र कि अहम भूमिका होगी। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र के समक्ष चुनौतियों का समाधान सुनिश्चित करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों को अपनी कार्य पद्धति में सुधार करना होगा।

कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य करें वैज्ञानिक: प्रो. बी.आर. काम्बोज

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कृषि क्षेत्र के लिए चुनौतियों का समय है। इसलिए कृषि वैज्ञानिक विकसित होने वाली तकनीक व सुचनाओं के आदान प्रदान को प्राथमिकता दें। उन्होंने कहा कि किसानों का हकृवि एवं कृषि विकास केन्द्रों पर अटूट विश्वास है। केवीके के माध्यम से किसानों को समय-समय पर मौसम संबंधी जानकारी, फसल उत्पादन की एडवाइजरी, मिट्टी पानी की जांच सहित अन्य जानकारी दी जा रही हैं जिससे फसल उत्पादन की लागत को कम करने में मदद मिल रही है। इसलिए वैज्ञानिक किसानों की समस्याओं के निराकरण एवं कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य करें।

उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान करने एवं कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी हेतु तकनीकी विकास, शोध कार्य, विस्तार शिक्षा पद्धति को किसानों की फीडबैक के हिसाब से बेहतर ढंग से करने व साथ-साथ प्रचार-प्रसार करने पर बल दिया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्थापना दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्थापना दिवस पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे।

प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना का समाज एवं राष्ट्र के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। एनएसएस के माध्यम से हम समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को पहचान सकते हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं को समाज सेवा करने का संकल्प लेना चाहिए। राष्ट्र के उत्थान में एनएसएस स्वयंसेवकों की अह्म भूमिका होती है। आधुनिक युग में स्वयंसेवकों की हर क्षेत्र में सहभागिता होना अनिवार्य है ताकि वे देश के ज्वलंत मुद्दों सहित हर चुनौतियों में अपनी सकारात्मक सोच के साथ उनका हल ढूंढ कर समाज को नई दिशा देकर उसकी दशा बदल सकें। एनएसएस जीवन जीने का एक तरीका है। समाज का उत्थान तभी संभव है जब स्वयंसेवक एनएसएस को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बना लें। भारत एक युवाओं का देश है। देश विकसित राष्ट्र तभी बनेगा जब भारत का युवा जागरूक होगा। कुलपति ने महाविद्यालय परिसर से स्वयंसेवकों की जागरूकता रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने कहा कि विद्यार्थी एनएसएस के आदर्शों को अपने जीवन में उतार कर समाज सेवा करने का संकल्प लें। एनएसएस का आदर्श वाक्य 'मैं नहीं आप' हमें सिखाता है कि जीवन में स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज और देश की सेवा करना हमारा प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़ ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि कार्यक्रम में आए हुए सभी अधिकारियों का राष्ट्रीय सेवा योजना अवार्डी डॉ. भगत सिंह ने धन्यवाद किया।

'कपास में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर कार्यशाला आयोजित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हकृवि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित की गई। मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लांट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं।

उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हकृवि एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. आरपी सिहाग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हकृवि एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लांट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइजरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदनी वाली फसल है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह ने कार्यशाला में सभी का स्वागत किया।

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव ने कार्यशाला में धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस एक दिवसीय कार्यशाला में हकृवि एवं कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के प्रदेशभर के अधिकारियों ने भाग लिया।

संक्षिप्त समाचार/संगोष्ठी/कार्यशाला/प्रशिक्षण में सहभागिता

● **हकृवि में विद्यार्थियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं उपलब्धः प्रो. बी.आर. काम्बोज :** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर (पीजी) एवं जूनियर रिसर्च फैलोशिप (जेआरएफ) प्रतियोगी परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों के लिए सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। कुलपति प्रो बी. आर. काम्बोज ने कहा कि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय का नाम विश्व पट्ल पर रोशन किया है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों ने अनुशासन में रहकर कड़ी मेहनत एवं लग्न के साथ परीक्षा की तैयारी करके आल इंडिया स्तर पर बेहतर प्रदर्शन किया है। विद्यार्थियों को इस परीक्षा की तैयारी के लिए शिक्षकों का भी भरपूर मार्गदर्शन मिला। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता युक्त शैक्षणिक सुविधाएं, बेहतर वातावरण एवं पुस्तकालय सहित सभी प्रकार की मुलभूत सुविधाएं मुहैया करवाई जा रही हैं। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि हकृवि के शिक्षक विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने में सर्वश्रेष्ठ है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता, डॉ. एसके पाहुजा ने कहा कि हमारे विद्यार्थियों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके प्रदेश व देश का नाम रोशन किया है। स्नातकोत्तर शिक्षा अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा ने भी सम्मान समारोह में विद्यार्थियों द्वारा अर्जित की गई उपलब्धि के लिए उन्हे बधाई दी।

● **कुलपति ने विद्यार्थियों के लिए पोर्टल का किया शुभारंभ :** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के हॉस्टल में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन हॉस्टल मैनेजमेंट सिस्टम पोर्टल लॉच किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने नए शैक्षणिक सत्र से हॉस्टल में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की सुविधा हेतु विधिवत रूप से पोर्टल का शुभारंभ किया है। प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि जो विद्यार्थी हॉस्टल में प्रवेश लेने के इच्छुक हैं वे इस पोर्टल के माध्यम से अपना ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इस सुविधा के माध्यम से विद्यार्थी रूम अलॉटमेंट से लेकर फीस जमा करवा सकेंगे। इससे विद्यार्थियों के समय की बचत होगी और उन्हें हॉस्टल संबंधी कार्यो के लिए किसी प्रकार की कोई परेशानी नही होगी। हॉस्टल में रहने वाले छात्र एवं छात्राओं का अवकाश के दौरान घर जाने व वापिस आने का विवरण भी इस पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन दर्ज किया जाएगा। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए 14 हॉस्टल हैं जिनमें पोर्टल की ऑनलाइन सुविधा शुरू की गई है। छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के कोर्स कंटेन्टस, असाइंमेंट, अटेंडेंस, रिजल्ट, टयूशन फीस व अन्य सुविधाएं एचएयू पोर्टल पर पहले से उपलब्ध हैं।

● **एचएयू में रिसर्च मैनेजमेंट' विषय पर रिफ्रैशर कोर्स का समापन :** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'रिसर्च मैनेजमेंट' विषय पर 21 दिवसीय रिफ्रैशर कोर्स संपन्न हुआ। विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय द्वारा आयोजित किए गए इस रिफ्रैशर कोर्स में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने रिफ्रैशर कोर्स के समापन अवसर पर वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए नए अनुसंधानों को बढ़ावा देना जरूरी है। कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए तापमान रोधी नई-नई किस्में व नई तकनीक विकसित करने के लिए और अधिक बेहतर ढंग से कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के दौर में असमय तापमान की बढ़ोतरी से निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को शोध कार्यों एवं अनुसंधानों के लिए महत्वकांक्षी योजना बनाकर कार्य करना होगा। इसके साथ-साथ नए उत्पादों को विकसित करने वाले अनुसंधान और नई प्रौद्योगिकियों के माध्यम से छोटे किसानों को नवीनतम तकनीकों के माध्यम से कम लागत में अधिक पैदावार की ओर अग्रसर करके उनकी आर्थिक स्थिति को सु ढ़ करना है।

उन्होंने वैज्ञानिकों से कृषि क्षेत्र में आने वाली मुख्य चुनौतियों पर अधिक से अधिक शोध करने एवं किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य करने की हिदायत दी। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि शोध कार्यों, नई कृषि तकनीकों, नवाचारों के साथ-साथ कृषि क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का निराकरण करने पर ज्यादा से ज्यादा कार्य करें। रिफ्रेशर कोर्स में सभी वैज्ञानिकों ने अपना एक-एक रिसर्च प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को 15 दिन के अंदर-अंदर इस रिसर्च प्रोजेक्ट को संबंधित एजेंसी को सौपने के निर्देश दिए। कुलपति ने कार्यक्रम के समापन अवसर पर कोर्स में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा ने अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने रिफ्रेशर कोर्स के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

● **78वां स्वतंत्रता दिवस मनाया :** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय स्थित कैंपस स्कूल में 78वां स्वतंत्रता दिवस समारोह बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की। उन्होंने कार्यक्रम में करतल ध्वनि के बीच ध्वजारोहण कर तिरंगे को सलामी दी। प्रो. बी. आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि देश को आजादी दिलाने के लिए हुए आंदोलनों में अनेक महापुरुषों, देशभक्तों, स्वतंत्रता सेनानियों ने बढ़-चढकर भाग लिया और राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को कायम रखने के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। उन्होंने कहा कि हमें उन शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेकर देशहित को सर्वोपरि मानते हुए इसकी उन्नति और विकास के लिए एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। यही उन वीर शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने कहा कि देश का भविष्य विद्यार्थियों एवं युवाओं पर निर्भर करता है।

राष्ट्र की समृद्धि, खुशहाली और सर्वांगीण विकास के साथ- साथ वर्ष 2047 तक भारतवर्ष को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए सभी को मिलकर कार्य करना होगा। उन्होंने देश के कृषि विकास में विश्वविद्यालय के योगदान के लिए किए जा रहे प्रयासों के लिए सभी की सराहना की।

हकृवि ने उच्च गुणवत्ता युक्त मक्का हाइब्रिड एच.क्यू.पी.एम 28 की विकसित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, करनाल ने चारे के लिए अधिक पैदावार देने वाली उच्च गुणवत्ता युक्त प्रोटीन मक्का (एच.क्यू.पी.एम.) की संकर किस्म एच.क्यू.पी.एम. 28 विकसित की है। यह संकर किस्म फसल मानकों और कृषि फसलों की किस्मों की केंद्रीय उपसमिति द्वारा उत्तर प्रदेश का बुंदेलखंड क्षेत्र, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ के लिए अनुमोदित की है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि यह नई किस्म एच.क्यू.पी.एम. 28 अधिक पैदावार देने के साथ-साथ उर्वरक के प्रति क्रियाशील भी है। यह किस्म पोषण से भरपूर व प्रमुख रोग मेडिस पत्ती झुलसा रोग के प्रतिरोधी व प्रमुख कीट फॉल आर्मी वर्म के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी है। इस किस्म की हरे चारे की पैदावार 141 क्विंटल प्रति एकड़ तथा उत्पादन क्षमता 220 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म बिजाई के बाद केवल 60-70 दिन में ही कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इस किस्म का हरा चारा पौष्टिकता से भरपूर है जिसमें प्रोटीन 8.7 प्रतिशत, एसिड-डिटर्जेंट फाइबर 42.4 प्रतिशत, न्यूट्रल डिटर्जेंट फाइबर 65 प्रतिशत और कृत्रिम परिवेशीय पाचन शक्ति 54 प्रतिशत है। इस किस्म के यह सभी पाचन गुण इसे मौजूदा किस्मों से बेहतर बनाते है। कुलपति ने क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र करनाल के वैज्ञानिकों की टीम को ईजाद की गई इस नई किस्म के लिए बधाई दी।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि तीन-तरफा क्रॉस हाइब्रिड होने के कारण इसका बीज उत्पादन किफायती है व क्यूपीएम हाइब्रिड होने के कारण यह पोषण से भरपूर है व इसमें आवश्यक अमीनो एसिड लाइसिन और ट्रिप्टोफैन की मात्रा सामान्य मक्का की तुलना में दोगुनी है।

क्षेत्रीय निदेशक डॉ. ओपी चौधरी ने एच.क्यू.पी.एम. 28 की बुआई का उपयुक्त समय बताते हुए कहा कि इस संकर किस्म को मार्च के पहले सप्ताह से लेकर सितंबर के मध्य तक उगाया जा सकता है। इस किस्म की बंपर पैदावार पाने के लिए जमीन तैयार करने से पहले 10 टन प्रति एकड़ अच्छी गुणवत्ता वाली गोबर की खाद डालनी चाहिए।

वैज्ञानिकों की जिस टीम ने इसको विकसित करने में मुख्य योगदान दिया उनमें डॉ. एमसी कम्बोज, प्रीति शर्मा, कुलदीप जांगिड़, पुनीत कुमार, साई दास, नरेन्द्र सिंह, ओपी चौधरी, हरबिंदर सिंह, नमिता सोनी, सोमबीर सिंह और संजय कुमार शामिल हैं।

फीडबैक

मीडिया एडवाइज़र

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार- 125 004

दूरभाष : 01662-255307

ई-मेल : mediaadvisorhau@gmail.com / prohaunews@gmail.com

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हिसार- 125 004 (हरियाणा), भारत

(1970 की संसदीय अधिनियम संख्या 16 द्वारा संस्थापित)

वेबसाईट : www.hau.ac.in

Published by Media Advisor on behalf of CCS Haryana Agricultural University, Hisar. Printed at : Dorex Offset, Hisar Mob. 98960-11117